तीव्र पुरुषार्थ - 17

अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ अब दिन प्रतिदिन नाजुक समय होने के कारण संहारीमूर्त बनना है। संहार भी किसका?

➳ _ ➳ अपने संस्कारों का। अपने विकर्मों पर और विकर्मी आत्मायें जो इस समय हैं उन्हों के ऊपर अब विकराल रूप धारण कर एक सेकेण्ड में भस्म करने का है।

➳ _ ➳ शंकर के लिए कहते हैं ना कि एक सेकेण्ड में आँख खोली और विनाश। यह संहारीमूर्त के कर्तव्य की निशानी है।

➳ _ ➳ कोई के भी ऊपर विकराल रूप बनकर दृष्टि डाली और उनके विकर्मी संस्कारों को भस्म कर दें।

➳ ➳ तो विकर्मों और व्यर्थ कर्मों, विकर्मियों के ऊपर अब विकराल रूप धारण करना है। अव स्नेहीमूर्त भी नहीं, अव तो काली रूप चाहिए। विकराल संहारी रूप चाहिए। अव लास्ट समय है।

(11/07/1970)

➢➢ किस किस को भस्म करना है ?

➳ _ ➳ विकर्मों को

→ पहले Realize कीजिये की हाँ मैंने बहुत पाप किये हैं

→ फिर पश्चाताप कीजिये

→ फिर प्रतिज्ञा कीजिये

→ और फिर प्रतिज्ञा को बार बार rewise कीजिये

➳ _ ➳ 5 मुख्य विकारों को और इनके सूक्षम रूपों को

→ काम का सूक्षम स्वरुप :- “लगाव”

→ क्रोध का सूक्षम स्वरुप :- “चिडचिड़ापन”

→ लोभ का सूक्षम स्वरुप :- “इच्छाएं” / “मेरापन”

- इतनी आसानी से मेरा शब्द का प्रयोग आप नहीं कर सकते
- इतनी सहजता से आप यह नहीं कह सकते की “मैंने यह किया”
- “मेरा” शब्द बहुत भारी शब्द है

→ मोह का सूक्षम स्वरुप :- “अच्छा लगता है”

→ अहंकार का सूक्षम स्वरुप :- “रौब”

➳ _ ➳ विकल्पों (उल्टे संकल्पों) को

➳ _ ➳ व्यर्थ संकल्पों को

➳ _ ➳ -ve संकल्पों को

➳ _ ➳ अवगुणों को

➳ _ ➳ कमजोरियों को

➳ _ ➳ व्यर्थ सम्बन्ध संपर्क

→ जिसमे मोह / आसक्ति / लगाव है

→ सबसे ममत्व हटा सिर्फ एक बाप को याद करो

➳ _ ➳ व्यर्थ चलन

→ श्रीमत के विरुद्ध हर व्यवहार का संहार करो

➳ _ ➳ व्यर्थ भाव / भावना

→ Be Emotionally Balanced

➳ _ ➳ व्यर्थ स्मृति

→ अतीत को आप बदल तो नहीं सकते पर आप अतीत से बहुत कुछ सीख सकते हैं

→ Neauterlise Your Memories

➳ _ ➳ व्यर्थ कल्पना

➳ _ ➳ व्यर्थ स्वपन

➳ _ ➳ व्यर्थ बोल

➳ _ ➳ व्यर्थ दृष्टि

➳ _ ➳ व्यर्थ वृत्ति

➳ _ ➳ व्यर्थ आदतें

➳ _ ➳ पुरानी बुधी

→ विपरीत बुधी को प्रीत बुधी में परिवर्तित करो

➳ _ ➳ आलस्य और अलबेलापन

➳ _ ➳ बहानेबाज़ी

➳ _ ➳ परमत, परचिन्तन, परदर्शन

➳ _ ➳ देहभान

→ देह के भोग

→ देह की इच्छाएं

→ देह के सम्बन्ध

→ देह के संस्कार

→ देह की भाषा

→ देह के स्थान

→ देह की स्मृतियाँ

➳ _ ➳ पुराने संस्कार

➢➢ भस्म कैसे करें ?

➳ _ ➳ वैराग की अग्नि से

→ इस संसार में आसक्ति न हो

➳ _ ➳ त्याग की अग्नि से

→ त्याग योगी का श्रृंगार है

➳ _ ➳ तपस्या की अग्नि से

→ घंटो तक बैठ बैठ कर योग करो

➳ _ ➳ पवित्रता की अग्नि से

→ पवित्रता सुख शांति की जननी है

➳ _ ➳ ज्ञान की अग्नि से

→ ज्ञान बल - सबसे बड़ा बल

➳ _ ➳ लगन की अग्नि से

→ सिर्फ एक की धुन लग जाए

➳ _ ➳ परमात्म प्रेम की अग्नि से

→ ऐसे याद करो बाप को जैसे 1 घंटे बाद शरीर छूटने वाला है